

## भारतीय सक्किा-ढलाई: प्राचीन से मध्यकालीन युग तक

### प्रलिमिंस के लयि:

सधु घाटी की मुहरें, पंच-चहिनति सक्किे, इंडो-गरीक, शक सक्किलके, कुषाण सक्किे, सातवाहन, वजियनगर साम्राज्य, मुगल साम्राज्य के सक्किे, भारत में सक्किा प्रणाली, प्राचीन और आधुनिक भारत के सक्किे, सक्किा अधनियम, 2011

### मुख्य परीक्षा के लयि:

भारत में सक्किे प्रणाली का विकास, प्राचीन और आधुनिक भारत की सक्किा प्रणाली की मुख्य वशिषताएँ

## प्राचीन भारत में सक्किों का इतहास क्या है?

- सधु घाटी सभ्यता की मुहरें:
  - मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सधु घाटी सभ्यता 2500 ईसा पूर्व और 1750 ईसा पूर्व के बीच की है। हालाँकि इस बात पर वदिवानों में मतभेद है कि पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त मुहरें वास्तव में सक्किे थीं या नहीं।
- आहत सक्किे:
- के वषिय में:
  - ये 7वीं-6वीं शताब्दी ईसा पूर्व और पहली शताब्दी ईस्वी के बीच जारी कयि गए सबसे पुराने ज्ञात सक्किे हैं।
  - इन सक्किों का उल्लेख प्राचीन संस्कृत ग्रंथों जैसे- मनुस्मृति और पाणिनी की अष्टाध्यायी के साथ-साथ बौद्ध जातक कथाओं में भी मलिता है।
- वशिषताएँ और लक्षण:
- इन सक्किों का नरिमाण चाँदी के सक्किों पर अलग-अलग छदिरों का उपयोग करके वभिन्न प्रतीकों को अंकति करके कयिा गया था।
- वे मुख्य रूप से चाँदी और ताँबे से बने होते थे, हालाँकि प्राचीन ग्रंथों में सोने के सक्किों का भी उल्लेख है, लेकिन इन सक्किों पर तारीखों या राजाओं के नाम अंकति नहीं थे।
- इनमें वभिन्न प्रकार के प्रतीक शामिल होते थे, जो प्रायः धार्मिक, पौराणिक या खगोलीय महत्त्व रखते थे। सामान्य रूपांकनों में सूर्य, वृक्ष और धरमचक्र शामिल थे; इसके अलावा, हाथी, बैल, घोड़ा, बाघ और गाय जैसे जीव-जंतु भी प्रमुख प्रतीक थे। साथ ही, पौराणिक कथाओं और गूढ़ अर्थों से जुड़े प्रतीकात्मक चित्रण भी इन रूपांकनों का अभिन्न हसिा थे।



## Punch Marked Coin, Silver Bentbar

### ■ भौगोलिक उपयोग:

- ईसाई युग के आरंभ तक ये प्रतिकि उत्तरी भारत में व्यापक रूप से प्रचलित थे ।
- दक्षिण भारत में इनका प्रयोग तीन शताब्दियों तक जारी रहा । उत्तरी भारत में इन सिककों के पतन का श्रेय हेलेनस्टिक आक्रमणकारियों द्वारा शुरू किये गए यूनानी सिककों के प्रभाव को दिया जाता है ।

### ■ इंडो-यूनानी सिकका ढलाई:

- इंडो-यूनानियों ने, जिन्होंने लगभग 189 ईसा पूर्व से 30 ईसा पूर्व तक शासन किया, भारतीय मुद्राशास्त्र पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला । उन्होंने नमिनलखिति की शुरुआत की:
  - आवकष प्रतमाएँ और शासक का चित्रण: शासक का सरि या आवकष प्रतमा उनके सिककों की केंद्रीय विशेषता बन गई ।
  - द्विभाषी कविदंतियाँ: सिककों पर एक ओर ग्रीक लिपि में तथा दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि में अभिलिख अंकित थे ।
  - हेलेनस्टिक प्रतीक: सामान्य चित्रण में ज़ीउस, हेराक्लीज़, अपोलो और पल्लास एथेना जैसे यूनानी देवता शामिल थे ।

### टपिपणी:

- भारतीय संदर्भ में सिककों का सबसे पहला उल्लेख वेदों में मिलता है, जहाँ धातुओं से बने सिककों के लिये 'नषिक' शब्द का प्रयोग किया गया है ।

## प्राचीन भारत के राजवंशीय सिककों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

- भारत में राजवंशीय सिकका-ढलाई का संबंध इंडो-यूनानियों, शक-पहलवों और कुषाणों से है, जो लगभग दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच का है ।
- इंडो-यूनानी सिकके:
- इंडो-यूनानी, जिन्होंने लगभग 189 ईसा पूर्व से 30 ईस्वी तक शासन किया, ने भारतीय मुद्राशास्त्र पर गहरा प्रभाव डाला ।
  - इनमें हेलेनस्टिक परंपराएँ शामिल हैं, जिनमें यूनानी देवी-देवताओं और शासकों के चित्र दर्शाए गए हैं ।
  - इन सिककों पर अंकित यूनानी कविदंतियाँ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अंतरदृष्टि प्रदान करती हैं, जो इंडो-यूनानी इतिहास के पुनर्निर्माण के लिये प्राथमिक स्रोत हैं ।



Indo-Greek Coins

■ **प्रमुख विशेषताएँ:**

- **आवक्ष प्रतमाएँ और शासक का चित्रण:** शासक का सरि या आवक्ष प्रतमा उनके सक्कों की केंद्रीय विशेषता बन गई।
- **द्विभाषी कविदंतियाँ:** सक्कों पर एक ओर ग्रीक लिपि में तथा दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि में अभिलिख अंकति थे।
- **हेलेनिस्टिक प्रतीक:** सामान्य चित्रण में ज़ीउस, हेराक्लीज़, अपोलो और पल्लास एथेना जैसे यूनानी देवता शामिल थे।

■ **शक सक्का:**

- इसका संबंध **पश्चिमी क्षत्रपों** से है और ये सक्के सबसे प्रारंभिक तथि वाले सक्कों में से हैं।
- तथियाँ **शक संवत्** के अनुसार अंकति की जाती हैं, जो 78 ई. में शुरू हुआ और अब यह भारत का आधिकारिक कैलेंडर है।

■ **कुषाण सक्के:**

- **लगभग 100 ईसा पूर्व यूह-ची जनजात की एक शाखा कुषाण, बैक्ट्रिया में शकों को परास्त कर अस्तित्व में आई।**
- कुषाण सक्के डज़ाइन और प्रतीकात्मकता में क्रमिक भारतीयकरण को दर्शाते हैं, जिसमें भारतीय धार्मिक रूपांकनों पर अधिक ज़ोर दिया गया है जैसे- **शिव**, **बुद्ध** और शासकों के पैर पर पैर रखे हुए चित्रण, जो भारतीय कलात्मक परंपराओं को दर्शाते हैं।
- वे **सांस्कृतिक सम्मिश्रण भी प्रदर्शित करते हैं, जिसमें यूनानी शिल्प कौशल, शाओनानो शाओ** जैसी ईरानी उपाधियाँ और भारतीय धार्मिक और कलात्मक तत्त्वों का सम्मिश्रण है, जो हेलेनिस्टिक, ईरानी और भारतीय परंपराओं के बीच सांस्कृतिक मध्यस्थ के रूप में कुषाणों की भूमिका को उजागर करता है।



■ **सातवाहन सक्के:**

- **सातवाहनों (270 ईसा पूर्व से 227 ईसवी)**, जिन्हें आंध्र के नाम से भी जाना जाता है, ने **गोदावरी** और **कृष्णा** नदियों के बीच के क्षेत्र पर शासन किया तथा **पश्चिमी दक्कन** एवं मध्य भारत पर अपना नियंत्रण बढ़ाया।
- सातवाहन साम्राज्य के सक्कों में मुख्य रूप से **सीसा का प्रयोग किया गया**, उसके बाद **ताँबे और पोटनि (चाँदी और ताँबे का एक मिश्र धातु) का प्रयोग किया गया** तथा **चाँदी के सक्के** दुर्लभ थे। सातवाहन साम्राज्य के सक्कों में मुख्य रूप से **सीसा (Lead) का प्रयोग** हुआ था। इन सक्कों पर प्रायः **हाथी, शेर, बैल और घोड़े जैसे पशुओं के चित्र अंकति होते थे** तथा साथ में पहाड़ एवं वृक्ष जैसे **प्राकृतिक प्रतीक भी अंकति होते थे**।
- चाँदी के सक्कों पर क्षत्रप डज़ाइन से प्रेरित **चित्र और द्विभाषी कविदंतियाँ अंकति थीं**।
- इसके अलावा, कई सक्कों पर **उज्जैन का प्रतीक** एक तरफ चार वृत्तों वाला क्रॉस अंकति था। कलात्मक परिष्कार की कमी के बावजूद, सातवाहन सक्के सातवाहन काल के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिये महत्वपूर्ण स्रोत हैं।



**Coins of the Satavahana**

■ पश्चिमी क्षत्रपः

- शक मूल के पश्चिमी क्षत्रपों ने पहली शताब्दी से चौथी शताब्दी ई. तक मालवा, गुजरात और काठियावाड़ सहित **पश्चिमी भारत** के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
- उनके सिकके ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उन पर **शक युग (78 ई. से शुरू)** की तिथि अंकित है, जिससे **गुप्त वंश** के **चंद्रगुप्त द्वितीय** द्वारा उन्हें उखाड़ फेंकने तक के **इतिहास के पुनर्निर्माण** में सहायता मिली।
- इन सिककों में आमतौर पर **एक ओर राजा का चित्र और दूसरी ओर बौद्ध चैत्य या स्तूप** अंकित होता था, जो सातवाहन सिककों से प्रेरित था।
- उनके सिककों पर यूनानी, ब्राह्मी और कभी-कभी **खरोष्ठी** भाषा में अंकन होता था, जिनमें 'बैल और पहाड़ी' तथा 'हाथी और पहाड़ी' जैसी सामान्य आकृतियाँ बनी होती थी।

Description	Obverse	Reverse
Rudrasimha I, 180-196 AD		
Viradaman, 234-238 AD		

**Coins of the Western Kshatrapas**

■ गुप्तकालीन सिकके:

- गुप्तकालीन सिकका-ढलाई ( **300-550 ई.**) महत्वपूर्ण हट्टि पुनरुत्थान और कलात्मक उत्कृष्टता की अवधि का प्रतिनिधित्व करता है।



- मुख्यतः सोने से बने तथा कभी-कभी चाँदी और ताँबे से बने गुप्त सक्किके अपनी विविधता और जटिल आकृति के लिये प्रसिद्ध हैं।
- चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा पश्चिमी क्षत्रपों को पराजित करने के बाद चाँदी के सक्किके सामने आए।
- गुप्तकालीन स्वर्ण सक्किकों में आमतौर पर एक तरफ राजा को दर्शाया जाता था, जो विभिन्न भूमिकाओं में चित्रित होते थे, जैसे कि प्रसाद चढ़ाते हुए, वीणा बजाते हुए, अश्वमेध यज्ञ करते हुए, जानवरों की सवारी करते हुए या जंगली जानवरों का वध करते हुए पीछे की तरफ अक्सर देवी लक्ष्मी को सहिसन या कमल पर बैठे हुए या कभी-कभी खुद रानी को दर्शाया जाता था।
- संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण ये अभिलिख भारतीय सक्किकों पर संस्कृत भाषा के प्रथम प्रयोग को दर्शाते हैं।
- इन सक्किकों पर राजवंशीय उत्तराधिकार, विवाह गठबंधन और शाही उपलब्धियों जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं का भी स्मरण किया जाता था।

Description	Obverse	Reverse
King as Horseman		
King as Lion Slayer		
King & Queen Type		
Fan-Tailed Peacock		



#### ■ गुप्तोत्तर काल के सक्किके:

- गुप्तोत्तर सक्किका-ढलाई (6वीं-12वीं शताब्दी ई.) एक ऐसी अवधि थी जिसमें कलात्मक नवाचार की कमी थी और इसे मुख्य रूप से सरल राजवंशीय मुद्राओं की विशेषता प्राप्त थी।
- उल्लेखनीय उदाहरणों में हर्ष (7वीं शताब्दी ई.), त्रिपुरी के कलचुरी (11वीं शताब्दी ई.) और प्रारंभिक मध्ययुगीन राजपूत वंश (9वीं-12वीं शताब्दी ई.) के सक्किके शामिल हैं।
- इस अवधि के दौरान सोने के सक्किके दुर्लभ थे, कलचुरी राजवंश के गंगेयदेव के शासनकाल में इनका पुनरुद्धार देखा गया, जिन्होंने 'बैठी हुए लक्ष्मी के सक्किके' जारी किये, जिनका बाद में अन्य शासकों ने सोने और अवमूल्यन दोनों रूपों में अनुकरण किया।
- राजपूत वंशों ने अक्सर अपने सक्किकों पर बैल और घुड़सवार की आकृति अंकित की।
- पश्चिमी भारत में, पूर्वी रोमन साम्राज्य के साथ व्यापारिक संबंधों के कारण आयातित बीजान्टिन सोलडि का उपयोग होने लगा, जिससे उस समय की आर्थिक अंतरक्रियाओं पर प्रकाश पड़ा।

Description	Obverse	Reverse
Seated Lakshmi		
Bull & Horseman		

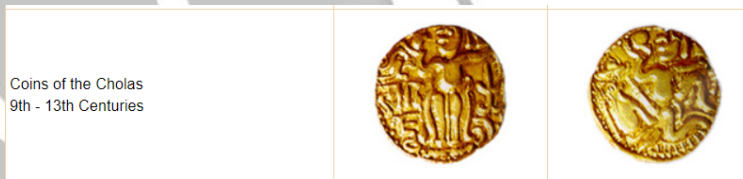
## प्राचीन दक्षिण भारत में सिककों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?

### ■ चालुक्य सिकके:

- पश्चिमी चालुक्य सिककों (6वीं-12वीं शताब्दी ई.) में एक ओर पुराने कन्नड़ में कविदंतियों के साथ मंदिर या सहि अंकति थे, जबकि पीछे की ओर खाली जगह थी।
- पूर्वी चालुक्य सिककों (7वीं-11वीं शताब्दी ई.) में बीच में एक सूअर का चहिन बना होता था जिसके चारों ओर राजा का नाम अंकति होता था और पीछे का भाग भी खाली होता था। ये सिकके क्षेत्रीय पहचान एवं प्रशासनिक प्रथाओं को दर्शाते थे।

### ■ चोल सिकके:

- चोल साम्राज्य, जिसने 10वीं से 13वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत पर प्रभुत्व स्थापित किया, ने राजराजा महान, राजेंद्र चोल और राजेंद्र कुलोथुंगा प्रथम जैसे प्रमुख सम्राटों के शासनकाल के दौरान विभिन्न प्रकार के सिकके जारी किये।
- सामान्य चोल सिककों में एक ओर खड़े राजा तथा दूसरी ओर बैठी हुई देवी की तस्वीर होती है तथा उन पर संस्कृत में अभलिख अंकति होते हैं।
- राजेंद्र चोल के सिककों पर बाघ और मछली के प्रतीक के साथ "श्री राजेंद्र" या "गंगईकोंडा चोल" भी अंकति है।
- कुलोथुंगा प्रथम के कुछ सिककों में बीच में बाघ, दोनों ओर मछली और धनुष के चहिन अंकति हैं तथा उन पर "कटाइकोंडा चोल" या "मलैनाडुकोंडा चोल" जैसी कविदंतियों भी अंकति हैं।



### ■ पांड्य सिकके:

- 7वीं शताब्दी में प्रचलित पांड्य सिककों में प्रारंभिक आकृतियों में एक ओर हाथी की आकृति और दूसरी ओर खाली स्थान होता था, जो आमतौर पर चौकोर आकार के सिककों पर अंकति किया जाता था।
- 7वीं और 10वीं शताब्दी के बीच, पांड्य सिककों पर मछली का प्रतीक प्रमुख हो गया, कभी-कभी अन्य प्रतीकों जैसे चोल खड़ी आकृति या चालुक्य सूअर के साथ भी।
- चाँदी और सोने के सिककों पर अभलिख संस्कृत में थे, जबकि ताँबे के सिककों पर आमतौर पर तमिल कविदंतियाँ अंकति होती थीं।
- पांड्य, जो पहले पल्लवों और बाद में चोलों के अधीन थे, पतन से पहले 13वीं शताब्दी में पुनः प्रमुखता प्राप्त कर ली।

### ■ चेरस:



■ उडुपी के अलुपास और देवगरिके यादवः

- उडुपी के अलुपास में मछली का राजवंशीय प्रतीक था (पांड्य के समान)
- देवगरिके यादवों ने 'पद्मातंक' जारी किये जिनके अग्र भाग पर आठ पंखुड़ियों वाला कमल बना था तथा पृष्ठ भाग खाली था।
- सक्कों पर आमतौर पर जारीकर्त्ता के नाम या उपाधियाँ स्थानीय लिपि में अंकित होती थीं।
- सजावटी तत्त्व सीमति थे और देवताओं का चित्रण केवल बाद में, [वजियनगर काल](#) (14वीं-16वीं शताब्दी ई.) के दौरान दिखाई देने लगा।



■ वदिशी सक्कः

- प्राचीन भारत के मध्य पूर्व, यूरोप (ग्रीस और रोम) के साथ-साथ चीन के साथ भी काफी व्यापारिक संबंध थे। यह व्यापार आंशिक रूप से भूमि मार्ग से होता था, जिसे बाद में [रेशम मार्ग](#) रूप में जाना गया और आंशिक रूप से समुद्री मार्ग के माध्यम से संचालित होता था।
- दक्षिण भारत में, जहाँ समुद्री व्यापार बहुत फल-फूल रहा था, [रोमन सक्के](#) भी अपने मूल रूप में प्रचलन में थे, यद्यपि कभी-कभी वदिशी संप्रभुता के अतिक्रमण को अस्वीकार करने के लिये सक्के की लंबाई कम कर दी जाती थी।

दृष्टि  
The Vision



Description	Obverse	Reverse
Roman Find in South India		
Roman Find in South India		
Byzantine Find in South India		

## दिल्ली सल्तनत के सक्कों की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं?

- मध्यकालीन भारतीय सक्कों का विकास:
- मध्यकालीन भारतीय सक्कों की ढलाई में सधि पर अरबों की वजिय (712 ई.) और 13वीं शताब्दी में [दिल्ली सल्तनत](#) की स्थापना के साथ बदलाव आया।
- प्राचीन सक्कों की पारंपरिक चित्रात्मक आकृतिका स्थान [इस्लामी शैली ने ले लिया](#), जिसकी विशेषता यह थी कि सक्कों के दोनों ओर अरबी लिपि में अभलिख अंकति थे।
- ये सक्के अपने प्राचीन समकक्षों की तुलना में अधिक वसितृत जानकारी प्रदान करते थे तथा धार्मिक और धर्मनरिपेक्ष दोनों पहलुओं के बारे में जानकारी देते थे।

दिल्ली सल्तनत (1206-1526) ने टंका (सोना/चाँदी) और जतितल (ताँबा) के साथ मानकीकृत मुद्रा को अपनाया, जिससे मुद्रा अर्थव्यवस्था का वसितार हुआ।

सक्कों पर भव्य उपाधयिँ अंकति होती थी (जैसे- अलाउद्दीन खलिजी को सकिंदर अल सानी कहा जाता था) और टकसालों का सम्मान होता था, जो राजनीतिक अधिकार, आर्थिक विकास और इस्लामी प्रभाव को दर्शाता था।

- [अलाउद्दीन खलिजी \(1296-1316 ई.\)](#) पहला भारतीय शासक बना जिसने अपने सक्कों पर अब्बासदि खलीफा का नाम हटा दिया और इसके स्थान पर स्वयं को [यामीन-उल-खलिफत](#) (खलीफा का दाहनि हाथ) कहने लगा।
  - उन्होंने [सकिंदर-उस-सानी](#) (द्वितीय सकिंदर) की उपाधि भी धारण की, जो सकिंदर की वरिसत के प्रती उनकी जागरूकता और महानता में उनके उत्तराधिकारी के रूप में पहचाने जाने की उनकी इच्छा को दर्शाता है।



- अलाउद्दीन खलिजी के उत्तराधिकारी [कतुबुद्दीन मुबारक \(1316-1320 ई.\)](#) ने सोने, चाँदी, बलियिन और ताँबे के सक्के जारी किये।



- उन्होंने अब्बासिद खलीफा का नाम त्यागकर तथा स्वयं को **खलीफुल्लाह (अल्लाह का खलीफा)** और **खलीफा रबबलि अलेमीन** (वशिव के प्रभु का खलीफा) घोषित करके एक महत्त्वपूर्ण बदलाव किया।
- उन्होंने अपनी सत्ता और महत्त्वाकांक्षा को प्रदर्शित करते हुए **सकिंदर-उज़-ज़मान** (युग का सकिंदर) की उपाधि भी धारण की।
- **मुहम्मद बनि तुगलक (1325-1351 ई.)** ने कांस्य मुद्रा प्रचलित की, जिसका वजन लगभग 10 ग्राम था, जिससे चाँदी के टंका के मूल्य पर स्वीकार किया जाता था।
- सकिकों पर कुछ इस तरह के अभिलिख अंकित थे, "जो राजा की आज्ञा का पालन करता है, वह ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है" और "मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में प्रचलित टंका के रूप में मुहरबंद, आशावान दास।" यह एक महत्त्वाकांक्षी लेकनि अंततः असफल मौद्रिक प्रयोग था।



- लोदी वंश के संस्थापक **बहलोल लोदी (1451-1459 ई.)** ने सोने और चाँदी के सकिकों प्रचलन बंद कर दिया, लेकिन अपने शासनकाल के दौरान अरबों और ताँबे के सकिके जारी करना जारी रखा। लोदी वंश ने 1526 तक शासन किया, जब **इब्राहिम लोदी को बाबर** ने पराजित कर दिया।
- **शेरशाह (1538-1540 ई.)** ने रुपया लगभग 11.5 ग्राम (11.2 से 11.6 ग्राम तक) वजन वाले चाँदी के सकिके के रूप में चलाया और आंशिक सकिके भी जारी किये।
  - उन्होंने अपने सकिकों पर देवनागरी कविदंती को पुनः शुरू किया और अपना नाम **श्री सेर साही** अंकित किया।
  - उन्होंने अरबों सकिकों को समाप्त कर दिया और भारी ताँबे के सकिके जारी किये, जिन्हें संभवतः **पैसा** कहा जाता था। इन सकिकों का वजन लगभग **20 ग्राम** था, इसके अलावा आंशिक मूल्य के सकिके भी प्रचलन में लाए गए।



## वजियनगर साम्राज्य के सकिकों की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?

- वजियनगर साम्राज्य ने **सोने, चाँदी, ताँबे** और बलियिन सकिकों सहित विभिन्न प्रकार के सकिके जारी किये, जो इसकी अपार संपदा को दर्शाते हैं।
- पगोड़ा सबसे ऊँचे मूल्य का था, जबकि **सोने के फनाम, चाँदी के तरास** और **ताँबे के सकिकों का** उपयोग रोजमर्रा के लेन-देन के लिये किया जाता था।
- प्रारंभिक सकिके विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से ढाले गए थे, जैसे- **बरकुर गद्यान** और **भटकल गद्यान**।
- **हरहिर प्रथम और बुकका** ने सोने के फनाम और चाँदी के तरास ढाले, जबकि **हरहिर द्वितीय ने** ब्रह्मा, वशिष्ठ और शिव सहित हट्टि देवताओं की मूर्तियों को शिवालियों पर स्थापित किया।
- **देवराय प्रथम** और **देवराय द्वितीय ने** इन प्रथाओं को जारी रखा और ताँबे के सकिके तथा चाँदी के तरास ढाले, जिन पर हाथी एवं खंजर के प्रतीक अंकित थे।

- तुलुव राजवंश के तहत, कृष्णदेवराय ने बैठे हुए बालकृष्ण की आकृति और उच्च मूल्य वाले ताँबे के सक्के जारी किये, जबकि अच्युत राय ने गंडाबेरुंडा (दो सरि वाले ईंगल) वाले सक्के जारी किये।
- सदाशिव राय ने भी इसी प्रकारके सक्के जारी रखे, जबकि राम राय ने ताँबे के सक्कों पर ध्यान केंद्रित किये।
- अरवट्टि राजवंश ने सोने और ताँबे के सक्के जारी किये, जो अक्सर भगवान वेंकटेश्वर के नाम पर थे, जसिके अग्र भाग पर तरुमलराय ने राम, लक्ष्मण और सीता का चित्रण किये था। ये सक्के समय के साथ साम्राज्य के राजनीतिक और धार्मिक विकास को दर्शाते हैं।



## मुगल साम्राज्य के सक्कों की प्रमुख विशेषताएँ क्या थीं?

- मुगल सक्का-निर्माण के चरण:
  - मुगल साम्राज्य, जसिने तीन शताब्दियों से अधिक समय तक दक्षिण एशिया के अधिकांश भाग पर शासन किया था, की अर्थव्यवस्था मज़बूत थी तथा उसे सोने, चाँदी और ताँबे की स्थिर सक्का प्रणाली का समर्थन प्राप्त था।
  - मुगल सक्का-निर्माण चार अलग-अलग चरणों से गुज़रा:
    - बाबर और हुमायूँ के अधीन भ्रमणशील या क्षेत्रीय चरण (1526-1556)
    - अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब जैसे सम्राटों के अधीन शासत्रीय चरण (1556-1707)
    - पतनशील चरण (1707-1720), आंतरिक अस्थिरता और कमज़ोर शासकों द्वारा चिह्नित
    - अर्द्ध-मुगल चरण (1720-1835), जसिके दौरान क्षेत्रीय शक्तियों और बाहरी ताकतों, जैसे- मराठा, सिख, राजपूत, फ़राँसीसी और अंगरेज़ों ने मुगल सम्राट के नाम पर सक्के जारी किये।
      - ये सक्के प्रायः सम्राट की नाममात्र सहमति से जारी किये जाते थे, जो साम्राज्य के विशाल प्रभाव और आर्थिक संरचना को दर्शाते थे।
  - मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर ने अपने पूरे शासनकाल में पारंपरिक तैमूरि मुद्रा, शाहरुखी जारी की।
    - तैमूर के बेटे शाहरुख मरिजा के नाम पर जारी इन चाँदी के सक्कों के अग्र भाग पर सुन्नी कलामा और पीछे की ओर राजा का इस्लामी नाम, उपाधि, तारीख और टकसाल का नाम अंकित था।
    - अपने सैन्य अभियानों और स्थानांतरण के बावजूद, बाबर ने 1530 ई. में अपनी मृत्यु तक तैमूर सक्का प्रणाली को जारी रखा।



Silver Shahrukhi issued by Babur from the Badakshah mint

- हुमायूँ ने अपने शासनकाल के पहले तीन वर्षों तक **शाहरुखी सक्किा** जारी रखा ।
  - **शेरशाह सूरी** द्वारा पदच्युत किये जाने के बाद हुमायूँ को **फारस** नरिवासति कर दिया गया, जहाँ उसने कुछ सक्किों पर **शिया कलमिा अंकति** करवाई ।
  - नरिवासन में हुमायूँ ने **कंधार से सक्किे जारी किये**, जिसमें **शाह तहमास्प** को अपना अधपित्तमाना गया ।
  - **शेरशाह सूरी ने रुपैया** (आधुनकि रुपया) और ताँबे का **पैसा** प्रचलति कयिा, जिससे द्वधितु मुद्रा प्रणाली (सलिवर और कॉपर) को मज़बूती मल्लि ।



Silver Shahrukhi issued by Humayun from the Delhi mint

- **अकबर ने शेरशाह की मुद्रा प्रणाली को अपनाया**, शाहरुखी के स्थान पर **रुपैया** चलाया और सोने के **सक्किे (मोहर)** तथा **त्रधितु मुद्रा** (सोना, चाँदी, ताँबा) प्रचलति की ।
  - उन्होंने **भारी मोहर** (10-12 रुपए मूल्य के) प्रचलति कयिे तथा **वर्गाकार** और **बहुकोणीय सक्किों** (मेहरबी) के साथ प्रयोग कयिा ।
  - अकबर ने **सोने और चाँदी की गुणवत्ता को परषिकृत कयिा** तथा सक्किा नरिमाण में उच्च मानकों को लागू कयिा । **सुलेख शैली को बढ़ावा देने वशिषज्ज उत्कीर्णकों को नयिकृत कयिा**, जिससे सक्किों की आकृति अधिक कलात्मक और सुंदर बनी ।
  - सक्किे **आगरा, दलिली, अहमदाबाद, लाहौर** और अन्य शहरों में ढाले गए ।
  - अकबर ने **सोने की बड़ी मोहर** (1000 तोला, लगभग 12 किलोग्राम तक) जारी की और उनके शासनकाल में **दीन-ए-इलाही** सक्किों का नरिमाण हुआ ।
  - उनके सक्किों पर 1585 ई. तक **सुन्नी कलमिा अंकति था**, जिसके बाद उन्होंने **दीन-ए-इलाही** शलिलेख और तथि नरिधारण के लयिे एक नया **इलाही युग शूरू कयिा** ।
  - उन्होंने सक्किों पर **फारसी कवतिा** के प्रयोग को भी लोकप्रयि बनाया ।

दृष्टि  
The Vision





One-tenth gold mohur issued by Akbar



Copper daam issued by Akbar from the Bhakkar mint

- अकबर के उत्तराधिकारी **जहाँगीर ने** सिककों की ढलाई में नवीनता दिखाई तथा उन्होंने सिककों पर अपने पिता **केयथार्थवादी चत्तिर और तारीखों को दर्शाने के लिये राशचिह्न अंकित किये** ।
  - अकबर ने पारंपरिक धार्मिक मानदंडों को चुनौती देते हुए कुछ वशिष्ट सिकके जारी किए, जिन पर उसका स्वयं का चत्तिर अंकित था । इनमें से कुछ सिककों में उसे **शराब का प्याला पकड़े हुए** दर्शाया गया, जो उस समय की इस्लामिक परंपराओं से हटकर था ।
  - **जहाँगीर ने सिककों पर हज़िरी युग** के प्रयोग को आंशिक रूप से पुनः शुरू किया तथा उनमें से कई पर **काव्यात्मक छंद भी शामिल किये** ।
  - उन्होंने अपनी पत्नी **नूरजहाँ को सिकके जारी करने का अधिकार दिया**, जिससे वह रजिया सुल्तान के बाद ऐसा करने वाली पहली रानी बनी ।



Zodiac coin (Taurus) issued by Jahangir

- **शाहजहाँ ने** अपने सिककों पर **कलमिा को** पुनः प्रचलित किया तथा तैमूर की उपाधि की प्रतध्वनिकरते हुए **'साहबि-ए-करिान सानी'** (भाग्यशाली खगोलीय संयोजनों का दूसरा स्वामी) की उपाधिका प्रयोग किया ।
- **शाहजहाँ ने जहाँगीर द्वारा जारी किए गए चत्तिरयुक्त सिककों** और राशचिह्न (ज़ोडियक) सिककों को पघिलाने का आदेश दिया, ताकि रूढ़िवादी इस्लामी पादरथियों को संतुष्ट किया जा सके । ये सिकके जहाँगीर की धार्मिक सहषिणुता और कलात्मक रुचि को दर्शाते थे, शाहजहाँ के इस आदेश के कारण ये सिकके बेहद दुर्लभ हो गए, और जो कुछ ही नमूने बच पाए, वे आज ऐतहासिक रूप से अत्यंत मूल्यवान और संग्रहणीय बन चुके हैं ।





Silver mishqal issued by Shah Jahan—this denomination was discontinued during his reign

- **औरंगज़ेब** ने अवशिवासियों द्वारा सक्कों को अपवतिर करने से रोकने के लिये उनसे **कलमि** हटा दिया ।
  - उनके सक्कों पर उनके शासन की प्रशंसा करते हुए एक **काव्यात्मक छंद और टकसाल के स्थान और शासन वर्ष को इंगति करने वाला एक सूत्र अंकति था ।**
  - इससे सक्क-नरिमाण की आकृति अधिक सादगीपूर्ण और मानकीकृत हो गई तथा सुलेखकों के लिए रचनात्मक अवसर सीमति हो गए ।



- **मुगलों का पतन**
  - **औरंगज़ेब की मृत्यु (1707) ई.** के बाद, कषेत्रीय शक्तियों और **ईस्ट इंडिया कंपनी** जैसी वदिशी संस्थाओं ने सक्का ढालने के अधिकार हासलि करना शुरू कर दिया, जिससे सक्कों पर मुगल नरिंत्रण कमज़ोर हो गया ।
  - **फररुखसयिर ने सक्का ढालने के अधिकार के लिये फरमान (फरमान)** जारी करने की प्रथा शुरू की, जिससे ईस्ट इंडिया कंपनी को **बंबई में सक्के ढालने का अधिकार मलि गया (1717) ।**
  - **मुहम्मद शाह के शासनकाल** के दौरान टकसाल अधिकारों में गरिवट तेज़ हो गई, जो नादरि शाह (1739) के **फारसी आक्रमण और हैदराबाद के नज़ाम** तथा **अवध के नवाब** जैसी कषेत्रीय शक्तियों के उदय से चहिनति है, जिन्होंने अपने स्वयं के सक्के जारी कयि ।
  - **बकसर के युद्ध (1764) ई.** में **शाह आलम द्वितीय** की हार के बाद मुगल सत्ता समाप्त हो गई, जिसके परिणामस्वरूप 1803 ई. में दलि्ली पर बरिदिशि नरिंत्रण स्थापति हो गया और अंततः 1835 ई. में सक्कों पर मुगल नामों के स्थान पर बरिदिशि सम्राट का नाम अंकति कर दिया गया ।
  - अंतिमि मुगल सम्राट **बहादुर शाह ज़फर** ने **1857 ई. के वदिरोह** के दौरान सक्के जारी कयि, लेकिन अंगरेज़ों ने उन्हें नरिवासति कर दिया, जिससे **मुगल सक्का-प्रचलन का अंत हो गया ।**

दृष्टि  
The Vision



One-tenth silver rupee issued by the East India Company in the name of Alamgir II from Tellicherry mint

### सकिका अधनियम, 2011

- [सकिका अधनियम, 2011](#) , जसिने 1906 ई. के सकिका अधनियम को प्रतस्थापति कयिा , के अनुसार सकिका कसिी भी धातु या अन्य भौतिक वस्तु को कहा जाता है जसि पर सरकार या उसकी अधिकृत इकाई द्वारा मुहर लगाई जाती है ।
- यह अधनियम केंद्र सरकार को वभिन्न मूल्यवर्ग के सकिके डिजाइन करने और ढालने का अधिकार देता है, जबकि [भारतीय रज़िर्व बैंक](#) (आरबीआई) की भूमिका केंद्र सरकार से आपूर्ति के आधार पर वतिरण तक सीमति है ।
- सरकार RBI के अनुरोध के आधार पर वार्षकि खनन मातृा नरिधारति करती है ।
- सकिके मुंबई, हैदराबाद, कोलकाता और नोएडा स्थति चार सरकारी प्रतष्ठानों में ढाले जाते हैं ।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**??????:**

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजयि: (2021)

1. भारतीय रज़िर्व बैंक (RBI) के गवरनर की नयुक्तकेंद्र सरकार द्वारा की जाती है ।
2. भारत के संवधान में कुछ प्रावधान केंद्र सरकार को जनहति में RBI को नरिदेश जारी करने का अधिकार देते हैं ।
3. RBI के गवरनर भारतीय रज़िर्व बैंक अधनियम से अपनी शक्तिप्राप्त करते हैं ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

- A. केवल 1 और 2
- B. केवल 2 और 3
- C. केवल 1 और 3
- D. 1, 2 और 3

उत्तर: C

**??????:**

प्रश्न. आप इस वचिार को कगुप्तकालीन सकिका शास्त्रीय कला की उत्कृष्टता का स्तर बाद के समय में देखने को नहीं मलित्ता, कसि प्रकार सदिध करेंगे?(2017)